खंड: 7, अंक: 1 जनवरी 2024 RNI- DELHIN/2021/84711
ISSN- 2584-2803 (Print)

# संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

# राम मंदिर और राष्ट्रीय चेतना: विचार, विश्वास एवं विकास

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

दिल्ली विश्वविद्यालय

## संपादक

**प्रोफेसर सुनील कुमार**

निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

**ई-मेल आई डी:** director@cgs.du.ac.in

**प्रोफाइल लिंक:** https://cgs.du.ac.in/directorMessage.html

## संपादक मंडल

**डॉ रमेश कुमार भारद्वाज**

सहायक आचार्य, सरकारी पी.जी कॉलेज, जीवाजी विश्वविद्यालय, श्योपुर पाली रोड, मध्य प्रदेश, पिन कोड-476337
संयुक्त निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

**ई-मेल आई डी:** rkbhardwaj1@cgs.du.ac.in

**प्रोफाइल लिंक:** https://www.mphighereducation.nic.in

**डॉ महेश कौशिक**

सहायक आचार्य, श्री अरबिंदो कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

**ई-मेल आई डी:** mkaushik@cgs.du.ac.in

**प्रोफाइल लिंक:** https://www.aurobindo.du.ac.in

**डॉ संध्या वर्मा**

एसोसिएट प्रोफेसर, श्यामलाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

**ई-मेल आई डी:** sverma@shyamlale.du.ac.in

**प्रोफाइल लिंक:** https://shyamlale.du.ac.in/wp-content/uploads/2021/11/sandhya-Verma-Political-Science.pdf

**डॉ अभिषेक नाथ**

सहायक आचार्य, एमएलटी कॉलेज, सहरसा; बी एन मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार।

**ई-मेल आई डी:** tuesdaytrack@gmail.com

**प्रोफाइल लिंक:** https://bpsm.bihar.gov.in/Assets2022/AssetDetails.aspx?P1=2&P2=12&P3=239&P4=3



**© सीजीएस2024**

# संश्लेषण

# राम मंदिर और राष्ट्रीय चेतनाः विचार, विश्वास एवं विकास

अनुक्रमिका

संपादकीय


1. राम मंदिर व राष्ट्रीय चेतनाः एक संघर्षमय यात्रा – सृष्टि 1–4
2. राम मंदिरः विचार एवं विकास – दुर्गावती 5–7
3. राम मंदिर एवं आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय चेतना का विषय – यश शर्मा 8–12
4. अयोध्या राम जन्मभूमि मंदिर का महत्वः भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान का एक प्रतिबिंब – रमेश चौधरी 13–18
5. सांस्कृतिक चेतना और पुनुरुत्थान का पथवाहक रामराज्य – अभय कुमार शुक्ल 19–29
6. राम मंदिरः धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व – ऐलिन 30–34

# सम्पादकीय

निरंतरता, गुणवत्ता एवं महत्ता पर केन्द्रित सामरिक वाद–विषयों पर युवा शोधार्थियों से लेख आमंत्रण एवं प्रकाशन समसामयिक सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण चुनौती रहा है। प्रकाशन के इन महत्वपूर्ण सरोकारों और चुनौतियों के आलोक में वैश्विक अध्ययन केंद्र अपनी मासिक पत्रिका, संश्लेषण के 66वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए अत्यंत हर्ष और उल्लास का अनुभव कर रहा है। पाँच वर्षों से प्रकाशन की इस अकादमिक यात्रा में केंद्र एक परिवार के रुप में समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों से सामाजिक विज्ञान के प्रति अपने संकल्पित ध्येय को साकार करता आ रहा है। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंक शोध के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एवं दृढ़निश्चतता को प्रदर्शित करने का ही एक सामान्य प्रयास है।

राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण का विषय राजनीतिक और न्यायिक उतार–चढ़ाव का केंद्र रहा है। इसे भारतीय राजनीति के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में देखा जाता है। राम मंदिर निर्माण के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों ने विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक समूहों का समर्थन प्राप्त किया है। जिसके फलस्वरूप, राम मंदिर निर्माण का विषय भारतीय राजनीतिक दलों के राजनीतिक और चुनावी अभियान का एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण भारतीयों के लिए न केवल धार्मिक व राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, अपितु यह भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक के रूप में महत्वपूर्ण है। यह देशवासियों के भावनात्मक व सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाला विषय रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने प्राण प्रतिष्ठा समारोह में अपने संबोधन में राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण परियोजना को राष्ट्र निर्माण की परियोजना तक विस्तारित करने का स्पष्ट आह्वान किया। राष्ट्र के निर्माण का संकल्प आत्मनिर्भर हो अपितु भव्यता और दिव्यता से भी भरपूर हो। राम समाधान हैं, विवाद नहीं। प्रधानमंत्री जी के इस वक्तव्य से राष्ट्रीय एकता की भावना को प्राप्त किया जा सकता है। वर्ष 2047 में जहां भारत अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के 100 वर्ष पूर्ण करेगा वहीं भारत सहयोग, समन्वय व सहकारिता के तत्वाधान में सशक्त, समर्थ व समृद्ध भारत को ओर अग्रसर करने में सहायता करेगा। इस विचार को एक विश्वास के रूप में समग्र विकास के लिए अग्रसर होना, अनेक सरोकारों एवं चुनौतियों से परिपूर्ण होगा। सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक समवेशिता

तथा आर्थिक गुणवत्ता भारत की इस यात्रा के लिए नया मार्ग प्रशस्त करेगी।

राष्ट्रीय स्तर पर विषय की महत्ता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'राम मंदिर और राष्ट्रीय चेतना, विचार, विश्वास एवं विकास' विषय पर लेख आमंत्रित किये। छह उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ भारत के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिदृश्य के बहुआयामी विशयों को भी संबोधित करते हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को प्रदृशित करने का एक सर्वनिष्ठ प्रयास, प्रयत्न और परिणाम है।

संपादक मंडल बुधवार, 14 फरवरी 2024

1

# राम मंदिर व राष्ट्रीय चेतनाः एक संघर्षमय यात्रा

सृष्टि
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय समाज में धार्मिक व सांस्कृतिक विषयों का महत्व अत्यधिक है। राम मंदिर का निर्माण, जो दशकों से चल रहा है, इसी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक व राष्ट्रीय विषय का एक प्रमुख उदाहरण है। यह संघर्ष न केवल धार्मिक आधार पर है, अपितु यह एक राष्ट्रीय चेतना का परिणाम है जो अनेक पीढ़ियों को भी जोड़ता है।

राम मंदिर का विषय भारतीय राजनीति का एक विस्तृत समय से चला आ रहा विषय है। इसमें समर्थन व विरोध दोनों तरफ के लोगों के भावनात्मक संवाद सम्मिलित हैं। राम मंदिर के निर्माण का अभियान, भारतीय समाज में राष्ट्रीयता व सांस्कृतिक एकता की भावना को सुदृढ़ करने का एक माध्यम बन गया है। राम मंदिर का निर्माण एक मात्र धार्मिक स्थल के रूप में नहीं देखा जा सकता है, अपितु इसका अद्भुत संदेश है कि भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता व समरसता की भावना अभी भी जीवंत है। इसके साथ ही, यह समर्थन भारतीय जनता की भावनाओं का परिचायक है, जो उनकी अग्रणी भूमिका को अस्वीकृत करने के लिए संघर्ष कर रही है।

राम मंदिर का निर्माण एक प्रेरणास्त्रोत है जो भारतीय समाज को उनके समृद्ध और विरासती धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों को सम्मान और संरक्षण की दिशा में आगे बढ़ा रहा है। इसके साथ ही, यह भारतीय जनता की एक सांस्कृतिक आवश्यकता को प्रकट करता है और उन्हें उनकी विरासत के प्रति समर्पित करता है। राम मंदिर का निर्माण एक ऐतिहासिक क्षण है, जो भारतीय समाज की रूचि में एक नया अध्याय जोड़ रहा है। यह साकार मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल होगा, अपितु यह एक राष्ट्रीय स्मारक भी होगा जो भारतीय समाज की सांस्कृतिक अस्मिता को पुनः स्थापित करेगा।

ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि

अयोध्या राम मंदिर का इतिहास सदियों पुराना है। मंदिर उस स्थान पर बनाया गया है जिसे भगवान राम का जन्मस्थान माना जाता है, जो सबसे अधिक पूजनीय हिंदू देवताओं में से एक हैं। 16वीं शताब्दी में मुगल सम्राट बाबर ने मंदिर को ध्वस्त कर दिया था और उसके स्थान पर एक मस्जिद बनाई गई थी। बाबरी मस्जिद के नाम से जानी जाने वाली मस्जिद सदियों तक इस स्थल पर खड़ी रही, जब तक कि 1992 में हिंदू राष्ट्रवादियों ने इसे ध्वस्त नहीं कर दिया, जिससे देश में व्यापक हिंसा व सांप्रदायिक तनाव फैल गया। अयोध्या विवाद दशकों से भारतीय राजनीति में एक विवादास्पद विषय रहा है। यह विवाद उस स्थान के स्वामित्व के इर्द–गिर्द घूमता था जहाँ बाबरी मस्जिद खड़ी थी और क्या यह भगवान राम का जन्मस्थान था। इस विवाद को आखिरकार 2019 में भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने सुलझाया, जिसने इस स्थल पर राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण के पक्ष में निर्णय सुनाया। मंदिर का निर्माण श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र द्वारा किया गया था, जो मंदिर के निर्माण की देखरेख के लिए भारत सरकार द्वारा गठित एक ट्रस्ट है।

देश की अल्पसंख्यक मुस्लिम जनसंख्या के लिए, लाखों हिंदुओं ने बहुप्रतीक्षित परिसर के उद्‌घाटन का जश्न मनाया, जिसे वे राम की जन्मस्थली मानते हैं, किंतु यह धार्मिक विभाजन की एक दर्दनाक स्मरण दिलाता है, जिसके बारे में उन्हें भी है कि मोदी की भाजपा सरकार के अंतर्गत यह और भी स्पष्ट हो रहा है।

बाबरी मस्जिद–राम मंदिर विवाद में मुख्य घटनाएँ निम्नलिखित हैं?

- 1529ः मीर बाकी द्वारा बाबरी मस्जिद का निर्माणरू बाबरी मस्जिद उत्तर प्रदेश के अयोध्या में स्थित 16वीं शताब्दी की मस्जिद थी। मस्जिद के स्थल को बड़ी संख्या में हिंदुओं द्वारा भगवान राम (श्री राम जन्मभूमि) का जन्मस्थान भी माना जाता है। इस कारण बार–बार इस तथ्य पर विवाद होता रहा है कि भूमि का स्वामी कौन है।

- दिसंबर 1949ः मस्जिद के अंदर राम की मूर्ति दिखाई दी।

- 25 सितंबर, 1990ः रथ यात्रा – लालकृष्ण आडवाणी ने आंदोलन के लिए समर्थन जुटाने के लिए सोमनाथ (गुजरात) से अयोध्या (यूपी) तक रथ यात्रा शुरू की।

- 6 दिसंबर, 1992ः बाबरी मस्जिद को कारसेवकों की हिंसक भीड़ ने ढहा दिया। कारसेवक इसके स्थान पर एक अस्थायी मंदिर छोड़ गए।

- 7 जनवरी, 1993: राज्य ने अयोध्या की भूमि का अधिग्रहण किया – सरकार ने 67.7 एकड़ भूमि अधिग्रहण करने के लिए अध्यादेश जारी किया।

- अप्रल 2002: इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने अयोध्या शीर्षक विवाद की सुनवाई शुरू की।

- 8 जनवरी, 2019: CJI ने अपनी प्रशासनिक शक्तियों का उपयोग करते हुए विषय को 5 न्यायाधीशों की संविधान पीठ के समक्ष सूचीबद्ध किया।

- 8 मार्च, 2019: सुप्रोम कोर्ट ने मध्यस्थता का आदेश दिया – संविधान पीठ ने अदालत की निगरानी में मध्यस्थता का आदेश दिया।

- 9 नवंबर, 2019– सर्वोच्च न्यायालय ने अपना अंतिम निर्णय सुनाया।

- विवादित भूमि भगवान राम लला को दी गईः सर्वोच्च न्यायालय ने सर्वसम्मति से निर्णय सुनाते हुए, विषय के तीन दावेदारों में से एक, भगवान राम लला को समर्पित मंदिर के निर्माण के लिए पूरी 2.77 एकड़ विवादित भूमि देकर विवाद का निपटारा किया।

- मस्जिद निर्माण के लिए भूमिः मंदिर के लिए भूमि के अतिरिक्त, न्यायालय ने मस्जिद के निर्माण के लिए अयोध्या में एक प्रमुख स्थान पर पांच एकड़ भूमि आवंटित की।

इस बड़े समर्थन के साथ, हमें समझना चाहिए कि राम मंदिर का निर्माण सिर्फ एक भावनात्मक विषय नहीं है, अपितु यह भारतीय समाज की राष्ट्रीय चेतना का एक अभिन्न अंग भी है। इस संघर्ष में, हमें समरसता, सांस्कृतिक एकता, व समर्थन की भावना को गहराई से समझने की आवश्यकता है जिससे कि हम सभी मिलकर एक समृद्ध व एकत्रित भारत की दिशा में अग्रसर हो सकें।

राम मंदिर भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अटूट भाग है और इसका संरक्षण व प्रतिष्ठा समाज की जिम्मेदारी है। यह धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक महत्व के साथ समृद्ध है और इसे ध्यान में रखकर इसकी रक्षा करना आवश्यक है।

## संदर्भ–सूची


- B. Jeyamohan (2024). “Ram Temple inauguration marks the start of an oppressive order”, *Frontline*.
- Radhika Bordia (2024). “Ayodhya Ram Temple: A Stage for the Visible Display of BJP’S Extremely Backward Class Politics” *The Wire.*
- https://edition.cnn.com/2024/01/22/india/modi-inauguration-india-ayodhya-temple-intl-hnk/index.html
- https://www.trimbakeshwar.org/


♦♦♦♦♦

2

# राम मंदिरः विचार एवं विकास

दुर्गावती
विद्यार्थी, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

राम मंदिर उज्जैन के राजा विक्रमादित्य द्वारा निर्माण किया गया था जिसे 1528 ई में बाबर द्वारा तोड़ दिया गया था जिसे बाद में बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया कुछ वर्ष पश्चात लगभग 189 वर्ष पश्चात 1717 में जयपुर के राजा जय सिंह द्वितीय ने मस्जिद के पास राम चबूतरा का निर्माण कराया जहां सनातनी राम भगवान की पूजा कर सके 1813 में सर्वप्रथम हिंदू संगठन ने बाबरी मस्जिद के स्थान पर राम मंदिर के होने का दावा किया। 1838 में ब्रिटिश सर्वे द्वारा यह पता चला की मस्जिद में प्रयोग होने वाले स्तंभ हिंदू कलाकृति के हैं जो राम मंदिर से लिया गया था 1853 में अयोध्या में सांप्रदायिक हिंसा हुई थी कुछ वर्ष पश्चात 1885 में निर्मोही अखाड़े के महंत रघुवीर दास फैजाबाद की जिला न्यायालय में याचिका दायर की जिसमें उन्होंने चबूतरे पर छतरी बनवाने की अनुमति मांगी किंतु न्यायालय ने यह याचिका खारिज कर दी। कुछ वर्ष पश्चात 1934 मे अयोध्या में फिर दंगे हुए इस बार बाबरी मस्जिद की एक दीवार गिरा दी गई थी जिसके पश्चात सरकार द्वारा उसे फिर बना दिया था वर्ष 1947 जब देश स्वतंत्रत हुआ उस समय सभी राम भक्तों को लगा कि राम मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाएगा। किंतु उस समय किसी भी कांग्रेस के नेता की बात से ऐसा नहीं लग रहा था कि राम मंदिर का निर्माण किया जाएगा उस समय बाबरी मस्जिद शुक्रवार को ही खुली होती थी व मुस्लिम वहां नमाज पढ़ते थे 1980 में बीजेपी के सामने आने के पक्षकत राम मंदिर आंदोलन ने नया रुख मोड़ लिया। बड़े संगठन जैसे संघ, विश्व हिंदू परिषद, भाजपा ये तीन संगठन राम मंदिर आंदोलन को तेज करने में लग गए साल 1990 मे लाल कृष्ण आडवाणी जी ने सोम नाथ से अयोध्या के लिए रथयात्रा निकलते है परंतु उन्हें समस्तीपुर में गिरफ्तार कर लिया जाता है जिस दिन रथयात्रा का समापन होना था, उसी दिन अत्यधिक संख्या में कारसेवक विवादित ढांचे पर झंडा फहरा देते हैं उस समय मुलायम सिंह की सरकार थी उन्होनें कारसेवकों पर गोली चलवाई गई। जिस से बड़ी संख्या में कारसेवक शहीद हो गए कुछ वर्ष पश्चात् 6 दिसंबर 1992 में 2 लाख कारसेवक अयोध्या पहुंच गए उस समय

कल्याण सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे और केंद्र में पीवी नरसिम्हा राव की सरकार थी कल्याण सिंह भिड़े को काबू करने के लिए असफल सवित हुई और फिर हिंसा हो गई करीबन 1000 लोगो को अपनी जान गवानी पढ़ी उसके बाद उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लग गया था और कल्याण सिंह ने अपने पद से इस्तिफा दे दिया था। 1990 के दशक में बीजेपी सत्ता में आई जिसके पश्चात सभी हिंदू संगठन राम मंदिर के पुननिर्माण के लिए सक्रिय हो गए। उसके पश्चात एएसआई को जांच प्रक्रिया सौंप दी गई। जिसके सर्वे से यह पता चला विवादित ढांचा से मिले अवशेषों से यह पता चला कि बाबरी मस्जिद से पहले ये राम मंदिर था, इसके पश्चात् सरकार ने एक निर्णय किया सरकार द्वार विवादग्रस्त जमीन को राम जन्मभूमि ट्रस्ट, सुन्नी वक्फ बोर्ड और निर्मोही अखाड़ा में बराबर बांट दिया परंतु तीनो पक्ष इस निर्णय से असहमत थे। 2011 में यह विषय सर्वोच्च न्यायालय पहुंचा, परंतु सर्वोच्च न्यायालय में विभिन्न वर्षों तक इस विषय पर कोई सुनवाई नहीं हुई। 2019 में न्यायालय द्वारा सभी दस्तवेजों की जांच करती है। जिसके पश्चात् नवंबर, 2019 में सर्वोच्च न्यायालय विवादित भूमि को राम जन्मभूमि ट्रस्ट को सांप देती है। अंततः 5 जनवरी 2020 को राम मंदिर का पुननिर्माण प्रारंभ होता है।

22 जनवरी 2024 को राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा हुई, जो करोड़ों सनातनियों लिए गर्व का दिन था। लगभग 500 वर्ष के संघर्ष के पश्चात् राम मंदिर का निर्माण पुनः हुआ। राम मंदिर राष्ट्रीय चेतना का मंदिर है अर्थात इससे भारतीय संस्कृति का विस्तार होगा। प्रभु श्री राम के आदर्श, विचार, मानवी मूल्यों का विस्तार होगा और राम राज्य की प्रेरणा का स्रोत बनेगा तथा लोग अपनी संस्कृति से जुड़े रहेंगे राम मंदिर राष्ट्रीय गौरव और एकजुटता को बढ़ावा दे रहा है।

राम मंदिर से विकास की प्रक्रिया में शीघ्रता आएगी क्योंकि राम मंदिर नया, भव्य धार्मिक और पर्यटक स्थल है। प्रत्येक वर्ष 5 से 10 करोड़ लोग दर्शन करने आया करेंगे जिस कारण होटल, धर्मशाला, रेस्टोरेंट, रिक्शा चालक, स्मारिका दुकानें, कुटीर उद्योग आदि का अत्यधिक लाभ होगा। मात्र राम मंदिर से ही उत्तर प्रदेश लगभग प्रत्येक वर्ष 25 से 30 हजार करोड़ का देश की अर्थव्यवस्था को लाभ हो सकता है। बड़े–बड़े होटल जैसे ताज, हयात व ओबेरॉय अयोध्या में 5 स्टार होटल का निर्माण करेंगे जिसके फलस्वरूप कई लोगो को रोजगार मिलेगा। उत्तर प्रदेश की सरकार ने अयोध्या वासी के लिए होम स्टे योजना का निर्माण किया, जिस कारण सामान्य जनता अपना आर्थिक विकास कर सकती है साथ ही, अयोध्या में यातायात विकास होगा तथा नये हवाई अड्डे बनवाए गए हैं। अकासा व स्पाइसजेट ने कई शहरों से अयोध्या की विमान सेवा प्रारंभ कर दी है। इंडिगो ने भी दिल्ली, अहमदाबाद व मुंबई से अयोध्या के लिए सीधी उड़ान शुरू की है।

साथ ही विभिन्न देश जैसे इंग्लैंड, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, फिजी से भी लोग अयोध्या आना चाहते हैं। एक सर्वे से पता चला है भारत की 8% की वार्षिक वृद्धि के हिसाब से 2033 तक पर्यटक कारोबार 443 बिलियन डॉलर का हो जाएगा प्रभु श्री राम के मंदिर से केवल अयोध्या का ही नहीं अपितु भारत का विकास होगा।

♦♦♦♦♦

3

# राम मंदिर एवं आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय चेतना का विषय

यश शर्मा

विद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय सभ्यता समग्र विश्व में अपनी प्राचीनता, संस्कृति व आध्यात्मिकता के लिए प्रसिद्ध व चर्चित हैं, जहां पश्चिमी विश्व में धर्म, संस्कृति इत्यादि विषयों को निजी क्षेत्र तक सीमित करके पिछड़ेपन के सूचक के रूप में देखा जाता है वहीं भारत में धर्म, जाति, संकृति इत्यादि नए आयामां में विकसित होकर आधुनिकता की और अग्रसर है, आज भारत आधुनिकता के नए पथ पर अपने विशिष्ट माध्यमों द्वारा आगे बड़ रहा है, भारत औपनिवेशिक मानसिकता की जंजीरों से मुक्ति प्राप्त कर अपनी प्राचीन सभ्यता के मूल्यों व आधुनिक सिद्धांतो को मिश्रित कर नवीन सिद्धांता को जन्म दे रहा है जो आने वाले वर्षों में भारत की वैश्विक स्तर पे छवि, आंतरिक विचारधारा व लोगो की चेतना को भिन्न आकार देने में अहम भूमिका निभाएंगे और राम मंदिर निर्माण को भविष्य में आने वाले उस परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण सूचक के रूप में देखा जा सकता है।

राम मंदिर व भारतीय राष्ट्रीय चेतना को समझने से पूर्व हमारे लिए आवश्यक है कि हम वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध कुछ विचारकों व उनके विचारों को समझने का प्रयास करें। राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय चेतना व इनके सूचकों के संदर्भ में वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध भिन्न–भिन्न चिंतकों के भिन्न विचार रहें है, जहां एरिक जे हॉन्सबॉम राष्ट्रवाद के उदय में राजनैतिक कारकों की भूमिका पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हैं वहीं अर्नेस्ट गेलनर आधुनिकता "हाई कल्चर" व एक प्रकार की विशिष्ट संस्कृति के प्रभुत्व से उत्पादि राष्ट्रवाद का उल्लेख करते हैं, बेनेडिक्ट एंडरसन भी अपनी "इमेजिंड कम्युनिटी" में जहां राष्ट्र को कल्पित, सीमित, संप्रभु, मॉड्यूलर समुदाय के रूप में प्रस्तुत करते हैं वहीं अपनी "स्पेक्टर ऑफ कंपैरिजन" में वे राष्ट्र से दूर रहते हुए विविध विविध प्रतीकों, सूचकों व कारकों द्वारा उत्पन्न हुए राष्ट्रवाद को "लॉन्ग डिस्टेंस नेशनलिज्म" क रूप में उल्लेखित करते हैं और यदि हम एंथोनी डी स्मिथ के विचारों को तो हम राष्ट्रीय चेतना व के उदय में भिन्न–भिन्न प्रतीक, विशिष्ट इतिहास और जातीयता के महत्व को समझने में सक्षम हो पाएंगे, इन सभी विविध चिंतकों के लेखों द्वारा हम राष्ट्रीय चेतना के उदय में राजनीतिक आयामों के महत्व, भिन्न–भिन्न

प्रतीकों की भूमिका, ऐतिहासिक आयामों की विशिष्टता इत्यादि कारकों की ओर ध्यान केंद्रित करके भारतीय परिप्रेक्ष्य को समझने का प्रयास कर सकते हैं जो कि अपने आप में ही विशिष्ट व नवीन प्रकार के राष्ट्रीवाद व विचारों को जन्म दे रहा है ।

22 जनवरी 2024 समग्र भारत के लिए एक ऐतिहासिक क्षण रहा है, इस दिन संपूर्ण भारत एक सुर में राम मग्न होकर हर्षो उल्लास के साथ अयोध्या में हो रही ऐतिहासिक राम मंदिर में राम लला की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का साक्षी बन रहा था, वह अपने आप में ही एक विशिष्ट अनुभव था,जब राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय प्रत्येक स्तर पर उत्सव मनाया जा रहा था, प्राण प्रतिष्ठा से कई दिन पहले से ही समग्र विश्व में रह रहे भारतीयों में भिन्न प्रकार के जोश, उत्सव व प्रसन्नता की अनुभूति को देखा जा रहा था, विश्व में धर्म का इतना भव्य उत्सव ना पहले कभी देखा गया है ना ही आगे कभी देखा जा सकेगा, जिस प्रकार से एक साथ मिलकर एक सुर में समग्र विश्व में भारतीय हिंदू व हिंदुत्व से प्रभावित जनसंख्या ने राम मग्न होकर इस उत्सव को एक त्योहार में प्रीवतित किया था वह अपने आप में ही अविश्वसनीय व दिव्य अनुभव था, जैसे मानो भारत अपना आधुनिक इतिहास लिख रहा हो, भारतीय जनसंख्या सचेत रूप से नवीन त्योहारों का निर्माण कर समग्र विश्व को अपनी आधुनिक विशिष्टता, सांस्कृतिक प्रबलता का संदेश दे रही हो।

यदि हम आधुनिकता को समझने का प्रयाग करें तो आधुनिकता का मूल आधार कॉन्ट्रैक्ट को माना गया है, जब कोई व्यक्ति, समुदाय, राष्ट्र अपने आप को प्राचीन पहचान व परंपराओं से मुक्त कर नवीन परिवेश को अपनाते है तब पश्चिमी विश्व के ज्ञान शास्त्र के अनुसार उन्हें आधुनिक माना जाता है परंतु भारत आधुनिकता के अपने अलग पथ पर चलता आया है, भारत व भारतीय जनसंख्या ने सचेत रूप से पूर्ण जागरूक होकर अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं व विचार प्रणाली को पुनः जीवित कर समग्र विश्व को विशिष्ट रूप से आधुनिक होने का संदेश दिया है व औपनिवेशिक मानसिकता को पीछे छोड़ सदियों से विश्व में प्रचलित धर्म व आधुनिकता के विचारों को चुनौती दे कर नवीन उदाहरणों को प्रस्तुत किया है कि आने वाले समय में शैक्षणिक जांच, राजनीतिक रणनीतियां, नागरिक चेतना व नव भारत के राष्ट्र निर्माण के मूल आधार के प्रमुख कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में जाना जाएगा ।

भारत की विविधता को सदैव उसके राष्ट्र निर्माण में एक बाधा ले रूप में देखा गया है ,भारत अलग अलग धर्म ,जाति,समुदायों,संकृती विशेष से जुड़े नागरिकों का राष्ट्र है जहां राजनीतिक रूप से एकता तो स्वतंत्रता प्राप्त होने के उपरांत ही प्राप्त कर ली गई थी परंतु सामाजिक एकता प्राप्त करना हमेशा से ही एक चुनौती रही है , भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नायकों ने राष्ट्र निर्माण

में अहम भूमिका निभाई और इतनी विविध जनसंख्या को एकजुट करके स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली परन्तु बाहरी शक्तियों से मुक्ति प्राप्त करने के उपरांत भी भारतीय एकता अलग अलग समुदायों ,जातियों में विभाजित रही, हिंदू भारत में बहुसंख्यक रहे हैं परंतु वे जातिवाद के कारण विभाजित रहे हैं, यदि इतिहास के पन्नो को देखा जाए तो उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम भारत के हर अंग में रहने वाले लोगों भिन्न–भिन्न विचारधाराओं ,समुदायों ,भाषाओं में विभाजित रहे हैं जिन्हें एक साथ लाना अपने आप में एक चुनौती रही है, परंतु आज भारत इन सभी विविधताओं को संजोए हुए राष्ट्र निर्माण की अपनी गाथा लिख रहा है ।

9 नवंबर 2019 को जहां भारतीय उच्चतम न्यायालय ने विवादित जमीन पर मंदिर निर्माण का निर्णय सुनाकर सभी हिन्दुओं की आस्था का मान रखा वहीं मस्जिद निर्माण हेतु अलग से जमीन प्रदान करने का निर्णय लेकर भारत को एक सर्व समावेशी राष्ट्र होने का अहसास दिलाया, राम मंदिर निर्माण हेतु निर्मित ट्रस्ट के साथ राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय स्तर पर सभी हिन्दुओं ने अपना योगदान देकर राम मंदिर निर्माण के इस स्वप्न को साकार किया व इस प्रक्रिया ने विविध समुदायों, जातियों, भाषाओं, राज्यों में विभाजित हिन्दुओं को एक राष्ट्र होने की अनुभूति कराई जिसका उदाहरण जनवरी में मनाए गए भव्य उत्सव (त्योहार) के रूप में देखा गया है जहां सभी समुदायों ने सभी विविधताओं को भूल कर भारतीय संस्कृति व एकजुटता की वैश्विक स्तर पर उदाहरण है।

राम मंदिर ने केवल भारत में रह रहे हिन्दुओं को ही नही अपितु दूसरे राष्ट्रों में रह रहे भारत के मूल निवासियों को भी एक राष्ट्र होने की अनुभूति कराई, अमेरिका, कनाडा, न्यू जर्सी, मॉरीशस, पेरिस इत्यादि 50 से भिन्न देशों में भिन्न–भिन्न स्थानों में स्थित हिन्दुओं ने रथ यात्रा, रैली, भजन, कीर्तन व इत्यादि कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा अभिषेक समारोह के सीधे प्रसारण के साक्षी रहे, न्यूयॉर्क में स्थित टाइम्स स्क्वायर के मध्य में भारतीय अमेरिकियों ने भगवान राम की बड़ी–बड़ी तस्वीरों से इस प्रतिष्ठित स्थान को जगमगा दिया, विश्व के समस्त देश भारतीय संस्कृति की इस विशाल प्रदर्शनी के साक्षी रहे तथा भारतीय राष्ट्रवाद के नए आयामों को स्वीकार करते हुए दिखे ।

किसी भी समुदाय में कुछ विशेष कहानियां,चिन्ह,प्रतीक,ऐतिहासिक धरोहर उसके राष्ट्र निर्माण में तथा लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाने में बहुत अहम भूमिका निभाती है और राम मंदिर ने भारतीय राष्ट्र का चिन्ह प्रतीक बनकर भारतीय विविधता को एक साथ लाकर इसका प्रशस्त उदाहरण प्रस्तुत किया है व भारत को उसकी सांस्कृतिक धरोहर जो की औपनिवेशिक मानसिकता के कारण भुलाई जा रही थी पुनः प्रदान की है केवल भारत ही नहीं उसके आस पड़ोस के राज्य जैसे की नेपाल

ने भी राम मंदिर निर्माण के उपरांत अपनी सांस्कृतिक जड़ों व राष्ट्रीय चेतना को और प्रबल पाया है जिसका अनुमान नेपाल से भेजे गए उपहार और दर्शन के लिए आई नेपाली यात्रियों की भीड़ से लगाया का सकता है।

राज्यों को सीमाओं द्वारा विभाजित किया जा सकता है परंतु राष्ट्र व राष्ट्रवाद सभी सीमाओं के बंधन से मुक्त होता है, पश्चिमी विश्व अपने कितने ही पैमानों से भारत की आधुनिकता व धार्मिक चेतना को तोलने व श्रेणियों में बांधने का प्रयत्न करले परंतु भारत सदैव से अपना पथ खुद निर्मित करता आया है तथा आगे भी करता रहेगा, जहां धर्म और आधुनिकता को समग्र विश्व में विरोधाभासी समझा जाता है। वहीं भारत इन दोनो आयामों को एक सिक्के के दो पहलुओं के रूप में साथ लेकर चला है, भारतीय सभ्यता की धार्मिक संवेदनशीलता के कारण भारतीयों के ह्रदय से धर्म के चिन्हों को मिटाना ना कभी संभव हो पाया है नौ ही आगे हो पाएगा, धर्म भारत में पिछड़ेपन का सूचक नही अपितु, विकसित भारत की सचेत रूप से अपनाई गई धरोहर है। जिसके जीवंत उदाहरण के रूप में आज राम मंदिर, उस से जुड़ी आस्था व आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय चेतना हम सभी के मध्य में उपस्थित है ।

संदर्भ सूचीः


- बेनेडिंक्ट एंडरसनः इमेजिन्ड कम्युनिटीस (1983), स्पेक्टर ऑफ कंपैरिजन (1998)
- अर्नेस्ट गेलनरः थॉट्स एंड चेंज (1964)
- एरिक जे हॉब्सबॉमः द इन्वेंशन ऑफ टडिशन (1983)
- एंथोनी डी स्मिथः द एथनिक ओरिजिन ऑफ नेशंस (1986)


♦♦♦♦♦

4

# अयोध्या राम जन्मभूमि मंदिर का महत्वः भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान का एक प्रतिबिंब

रमेश चौधरी

शोधार्थी, अफ्रीकी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री राम जन्मभूमि मंदिर, जिसे अयोध्या राम मंदिर के नाम से जाना जाता है, उत्तर प्रदेश के अयोध्या में स्थित एक हिंदू मंदिर है। जैसा कि नाम से ज्ञात होता है कि यह मंदिर भगवान श्री राम को समर्पित है और माना जाता है कि यह मंदिर राम जन्मभूमि (भगवान श्री राम के जन्मस्थान) पर स्थित है। यह मंदिर भगवान राम से जुड़ी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को दर्शाता है और हिंदुओं के लिए अत्यंत सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है।

अयोध्या के राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन में राष्ट्रीय चेतना और एकता के प्रतीक के रूप में मंदिर के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने मंदिर निर्माण परियोजना को राष्ट्र निर्माण की परियोजना की समझ तक विस्तारित करने का आह्वान किया और भारत को एकजुट करने वाली संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक के रूप में श्री राम के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को भारतीय संस्कृति और सभ्यता के इतिहास में एक नए युग का आरंभ बताया।

## राम जन्मभूमि मंदिर का महत्व

वर्तमान संदर्भ में, राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण समकालीन भारतीय समाज और संस्कृति के परिपेक्ष  में प्रासंगिकता और महत्व है। मंदिर का निर्माण एक लंबे समय से चले आ रहे धार्मिक और कानूनी विवाद को सुलझाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह भारत में सामाजिक–राजनीतिक समावेशिता और सहयोग के सार को भी दर्शाता है, जो धार्मिक मतभेदों

को दूर करने और सामंजस्यपूर्ण ढंग से प्रगति करने की राष्ट्र की क्षमता की पुष्टि करता है। इसके अतिरिक्त, राम जन्मभूमि मंदिर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पर्यटन के लिए एक मुख्य केंद्र के रूप में उभरने की स्थिति में है, जिससे विविध राष्ट्रीय और वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित करने की उम्मीद है, जिससे पर्यटन क्षेत्र के विकास में तेजी आएगी और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा। परिणामस्वरूप, इससे अयोध्या नगरी का सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व बढ़ेगा।

राम जन्मभूमि मंदिर का भारतीयों के लिए विविध प्रकार से सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक और अवसंरचनात्मक महत्व और निहितार्थ हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से, राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण और रामलला की प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा समारोह के पूरा होने के साथ, हिंदुओं और मुसलमानों के मध्य दशकों से चले आ रहे धार्मिक संघर्ष समाप्त हो गए। इससे देश में धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा मिलेगा। मंदिर के निर्माण को देश में हिंदुओं की लंबे समय से चली आ रही धार्मिक और आध्यात्मिक आकांक्षा की पूर्ति के रूप में देखा जाता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, अयोध्या का प्राचीन भारतीय महाकाव्य रामायण से गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध और जुड़ाव है, अयोध्या और श्री राम को देश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक माना जाता है। राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण भारत की सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत का जश्न मनाने और उसे संरक्षित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

राम जन्मभूमि मंदिर के आर्थिक महत्व के पहलू से, राम मंदिर के निर्माण से अयोध्या में मंदिर अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण और राम लला की प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा समारोह से अयोध्या देश के एक प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र में परिवर्तित होने की प्रबल संभावना है। जो बेहतर परिवहन संपर्क के कारण व्यापक रूप से व्यापार और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देगा। राम जन्मभूमि मंदिर, हिंदुओं के प्रमुख मंदिरों में से एक है, जो अयोध्या में पर्यटन को बढ़ावा देगा। इससे क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा मिलेगा, स्थानीय विकास के बेहतर अवसर प्रदान होंगे और अधिक रोजगार संभावनाएं पैदा होंगी। अवसंरचनात्मक विकास के दृष्टिकोण से, राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण ने अयोध्या क्षेत्र के अवसंरचनात्मक विकास की प्रक्रिया आरंभ कर दी है। इस क्षेत्र में सड़क, हवाई अड्डों जैसी प्रमुख अवसंरचनात्मक परियोजनाओं के बाद कुछ औद्योगिक और वाणिज्यिक फर्मों के आने की उम्मीद है।

राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण अंतरराष्ट्रीय निहितार्थ भी रखता है, जो वैश्विक मंच पर भारत की पहचान के परिप्रेक्ष्य और राजनीति को आकार देता है। यह सांस्कृतिक दावे का संदेश देता है, जो दर्शाता है कि भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सभ्यतागत विरासत केवल अतीत का अवशेष

नहीं है, बल्कि एक जीवित, सांस लेने वाली इकाई है जो निरंतर समृद्ध और विकसित हो रही है। राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या को वैश्विक स्तर पर आध्यात्मिक केंद्र के रूप में स्थापित करता है, जो विश्व को परंपरा और आधुनिकता के संगम का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करता है। एक ऐसे विश्व में जहां भू–राजनीतिक गतिशीलता और अंतरराष्ट्रीय संबंध आमतौर पर सांस्कृतिक रेखाओं और लक्षणों द्वारा आकार लेते हैं, राम मंदिर भारत की प्राचीन परंपराओं को संरक्षित करने की प्रतिबद्धता का एक मार्मिक पहलू है। सांस्कृतिक कूटनीति के संदर्भ में भी राम जन्मभूमि मंदिर का अंतरराष्ट्रीय महत्व है। राम की दिव्यता न केवल भारत में एक प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव के रूप में प्रभाव रखती है, बल्कि थाईलैंड, इंडोनेशिया, म्यांमार, दक्षिण कोरिया और मलेशिया जैसे देशों में सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग भी है। इससे भारत की सांस्कृतिक कूटनीति और कूटनीतिक संबंधों को और मजबूती मिलेगी।

राम जन्मभूमि मंदिर – सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान का प्रतीक

अयोध्या जैसा पवित्र शहर जो इतिहास, संस्कृति, परंपरा और आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है, राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण हिंदुओं की गहरी भावनाओं और भारत के सांस्कृतिक ताने–बाने का प्रमाण है। राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण की यात्रा धार्मिक दावों से संबंधित विवाद, कानूनी लड़ाई और भावनाओं से भरी रही है जो भारतीय सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में दशकों से गूंज रही है। हिंदुओं के लिए अयोध्या भगवान श्री राम के जन्म स्थान के रूप में एक विशेष स्थान रखता है, एक पूजनीय देवता और प्रणेता के रूप में जिनका जीवन और शिक्षाएँ लाखों भारतीय लोगों की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना में अंतर्निहित हैं। राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण सिर्फ एक मंदिर से अधिक प्राचीन भारतीय परंपरा का प्रतीक है, यह भारत की एक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सभ्यतागत विरासत के पुनरुद्धार का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने राम लला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के संबोधन में राम जन्मभूमि मंदिर के सांस्कृतिक महत्व का संकेत दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने अयोध्या राम जन्मभूमि मंदिर को भारत के दर्शन और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बताया। प्रधानमंत्री ने राम जन्मभूमि मंदिर को भारत के दृष्टिकोण, दर्शन और दिशा का मंदिर, भारत की राष्ट्रीय चेतना का मंदिर के रूप में प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि अयोध्या का राम जन्मभूमि मंदिर राष्ट्र निर्माण का आह्वान है, एक ऐसा राष्ट्र जो समर्थ, सक्षम, दिव्य और भव्य है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन यह भी कहा कि यह प्राण प्रतिष्ठा समारोह भारत के उज्ज्वल युग की शुरुआत का प्रतीक है।

हिंदुओं के लिए, राम जन्मभूमि मंदिर एक धार्मिक स्थल से कहीं अधिक है, यह भारत की सामूहिक सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना और पुनरुत्थान का प्रतिबिंब और प्रतिनिधित्व है। राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण की यात्रा आस्था की तीर्थयात्रा रही है, जो अटूट भक्ति और उद्देश्य की सकारात्मकता में अटूट विश्वास से चिह्नित है। यह एक ऐसे समुदाय के लचीलेपन का प्रतीक है जिसने अपनी सांस्कृतिक आकांक्षाओं को साकार होते हुए देखने के लिए प्रतीकात्मक और शाब्दिक दोनों तरह के विरोधों और झटकों का सामना किया है।

भारतीय समाज के व्यापक संदर्भ में, राम जन्मभूमि मंदिर सामाजिक–सांस्कृतिक समावेशिता का प्रतीक है। यह विविध विश्वास प्रणाली के सह–अस्तित्व को दर्शाता है, जिसके परिणामस्वरूप एक ऐसा वातावरण विकसित होता है जहाँ बहुलवाद और बहुसंस्कृतिवाद पनपता है। राम जन्मभूमि मंदिर की समावेशी भावना भारत के धर्मनिरपेक्ष लोकाचार का प्रमाण है, जहाँ किसी की आस्था का उत्सव मनाने से दूसरे की आस्था का सम्मान गौण नहीं होता।

राम जन्मभूमि मंदिर का परंपरा के संरक्षण के संबंध में भी प्रमुख महत्व है। राम जन्मभूमि मंदिर एक बहुआयामी केंद्र के रूप में कार्य करेगा, जो केवल अपने धार्मिक महत्व तक ही सीमित नहीं है, बल्कि एक गतिशील सांस्कृतिक गठजोड़ के रूप में भी कार्य करेगा, जहाँ भगवान राम की परंपरा, अनुष्ठान और त्यौहारों की समृद्ध परंपरा को सावधानीपूर्वक बनाए रखा जाता है, जो एक सांप्रदायिक बंधन को बुनता है जो एकता की गहरी भावना और सभी द्वारा साझा की जाने वाली विरासत को पोषित करता है।

निष्कर्षत, अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में एक मार्मिक अध्याय है। यह धार्मिक मान्यताओं की सीमाओं को पार करता है, लाखों भारतीयों की भावनाओं के साथ प्रतिध्वनित होता है जो इसे सांस्कृतिक पुनरुत्थान और राष्ट्रीय गारव के प्रतीक के रूप में देखते हैं। राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण उन लोगों की अदम्य भावना का प्रमाण है, जिन्होंने सभी प्रकार की बाधाओं के बावजूद, एक पवित्र स्थान को पुनः प्राप्त किया है जो उनकी सांस्कृतिक मान्यताओं और आकांक्षाओं का सार है। राम जन्मभूमि मंदिर का महत्व धार्मिक और सांस्कृतिक सीमाओं से परे है, जो सभी भारतीयों के लिए राष्ट्रीय पहचान की भावना को दर्शाता है। यह एकता का प्रतीक है, जो भारत के बहुलवादी और बहुसांस्कृतिक समाज की समृद्ध छवि को प्रतिध्वनित करता है।

राम जन्मभूमि मंदिर मात्र धार्मिक आस्था से कहीं अधिक सभ्यता, परंपरा, इतिहास, आध्यात्म और सांस्कृतिक मान्यताओं का संगम है। यह मंदिर भगवान राम की चिरस्थायी विरासत और राष्ट्र की सामूहिक भावना का प्रमाण है। उम्मीद है कि यह मंदिर भविष्य की पीढ़ियों की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आकांक्षाओं का मार्गदर्शन करते हुए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में काम करेगा, राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान की शुरुआत है।

## संदर्भ सूचीः


Ketkar, Prafull. (2024). *Ram Mandir Ayodhya: Reconstruction of National Consciousness.* Organiser

Gogoi, Pallabi. (2024). *The Resonance of Ram Mandir: Unveiling Ayodhya's Cultural, religious and Economic tapestry,* Organiser

ISKCON. (2024). *Ram Mandir and four kinds of Reawakening.* Iskcon Whitefield

Mahajan, Anilesh. (2024). *How PM Modi's Ram Temple address outlines his vision of India of the future.* India Today

Sahasrabuddhe, Vinay. (2024). *Ram temple in Ayodhya is just the start of India's cultural renaissance.* The Indian Express

Saxena, Anuraag. (2024). *Ram Mandir and Bharat's Geopolitical resurrection.* The Sunday Guardian

Verma, A & Kumar, Kushal. (2024). *Ram Mandir and its impact on India's Global Image.* The Daily Guardian


♦♦♦♦♦

5

# सांस्कृतिक चेतना और पुनुरुत्थान का पथवाहक रामराज्य

अभय कुमार शुक्ल

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

*"रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्य पराक्रमः।*

*राजा सर्वस्य लोकस्य देवानाम् इव वासवः॥"*

वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग 37

अयोध्या दुनिया की एक ऐसी नगरी है, जिसके सम्मान में जनमानस नाम के साथ 'जी' का प्रयोग करता है। वही अयोध्या नगरी अपने मूल को धारण कर रही है। श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव 22 जनवरी को सम्पन्न हुआ। श्री राम के स्वागत की तैयारी में करोड़ों–करोड़ भक्त प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुटे थे। अयोध्या राम की है और राम लोक के हैं। अयोध्या में रामलला का भव्य एवं दिव्य मंदिर बन गया। अयोध्या का गौरव लौट आया। यह सिर्फ राम के जन्मस्थान का मंदिर ही नहीं, भारत की सनातनी आस्था का शिखर भी है।

आज अयोध्या का वैभव भाव जागृत हो रहा है। इसके पीछे जिन महावीरों का अवदान है, उसे दुनिया जान–समझ रही है। विकसित भारत में अयोध्या उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए तैयार हो रही है। यह फिर से रामराज्य की कल्पना को साकार करेगी और उसकी सांस्कृतिक राजधानी बनेगी। यहां से ज्ञान, गुण और सागर का नीर फिर से प्रवाहित होगा। रामराज्य की परिकल्पना हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई है। यह सामाजिक समरसता, मानवीयता, न्याय, परोपकार, असत्य पर सत्य की विजय आदि भारतीय मूल्यों और संस्कारों का ही प्रतीक है। रामराज्य एक स्वस्थ राजनीति का प्रतीक ह, जहां समानता, बन्धुत्व, समरसता, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्य महत्वपूर्ण हैं। इसमे आम जन के सरोकार सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि "आजादी के अमृतकाल में भगवान राम जैसी संकल्पशक्ति देश को नई ऊंचाई पर लेकर जाएगी। अगले 25

वर्षों में विकसित भारत की आकांक्षा लिए आगे बढ़ रहे हम हिंदुस्तानियों के लिए श्रीराम के आदर्श, उस प्रकाश स्तंभ की तरह है, जो हमें कठिन से कठिन लक्ष्यों को हासिल करने का हौसला देंगे।

अयोध्या की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः

अवध में स्थित इक्ष्वाकुओं की अयोध्या में श्री राम के अवतरण के साथ ही सनातन वैदिक संस्कृति की अक्षुण्ण धारा का प्रवाह शुरू होता है। अवध के व्यापक भू–भाग का संकेत मन्त्रद्रष्टा ऋषि वशिष्ठ के उन दो सूक्तों में प्राप्त है जो ऋग्वेद में संग्रहीत हैं (7.82 एवं 7.83)। यह एक सुखद संयोग है कि ऋषि वशिष्ठ इस भूभाग के वैशिष्ट्य की अभिव्यंजना हेतु अवधं शब्द का प्रयोग करते हैं जो कालान्तर में इस क्षेत्र का नामधेय अवध हुआ, सन्दर्भित मन्त्र द्रष्टव्य है–"अवघं ज्योतिरदितेरृतावृधौ देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे"

अयोध्या का प्राचीनतम उल्लेख अथर्ववेद (10.2.31) में मिलता है। अथर्ववेद का यह संदर्भित मंत्र कृष्ण यजुर्ववेद के तैत्तीरीय अरण्यक (1.27.8) में भी प्राप्त है। अथर्ववेद की परम्परा से सम्बद्ध सीतोपनिषद् में वैखानस राम, ऋग्वेद से सम्बद्ध ऐतरेय ब्राह्मण में वन–चारण करने वाले राम मार्गवेय का सन्दर्भ और ऋग्वेद के दो मन्त्रों (10.3.3, 10.93.14) में से एक (10.93.14) में राम का राजा के रूप में उल्लिखित होना राम की प्राचीनता के सन्दर्भ में ध्यान आकर्षित करता है।

नगर के सन्दर्भ में अयोध्या के वैदिक वास्तु–विज्ञान का विधिवत विवेचन दिल्ली के वास्तु–सदन के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय विद्वद् सम्मलेन (23–25 जुलाई 2010) में प्रस्तुत शोध–पत्राधीत है। अयोध्या का वैदिक नगर–वास्तु परम्परा गुप्तकाल तक कालिदास के रघुवंश (10-60) में भी चतुर्मुखी तोरण वाली होकर ब्रह्मा के शरीर–रूप को धारण किए वर्णित है। अयोध्या का राम–जन्मभूमि के नाम से प्रसिद्ध परिसर हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र एवं हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। ब्रिटिश व इस्लामिक रेकॉर्ड्स में इस स्थान का उल्लेख इसी नाम से है, अर्थात् राम–जन्मभूमि जन्मभूमि या जन्मस्थान के रूप में।

हीरालाल पाण्डेय के अनुसार "इस स्थान पर बनाए गए विवादित ढाँचे की ऐतिहासिकता मात्र 1528 ई. तक जाती है जब मुगल आक्रामक बाबर द्वारा मीरबाँकी के माध्यम से खण्डित किये गए पूर्वकालिक राम–मन्दिर, जिसे विष्णु–हरि मन्दिर कहा जाता था, उसके ध्वंसावशेष का प्रयोग करते हुए इस्लामिक ढाँचे की रचना कराई गई। ध्वंसित मन्दिर की सामग्री का उपयोग करते हुए इस्लामिक संरचना का निर्माण भारत में कुतुबुद्दीन ऐबक के समय से ही होता रहा है।"

मीरबाँकी की जघन्य बर्बरता का उल्लेख सन्त तुलसीदास ने अपने तुलसी दोहा शतक (तुलसी सतसई) में भी किया है –

"संवत सर (5) वसु (8) बान (5) नभ (1) (=1585) ग्रीषम ऋतु अनुमानि ।

तुलसी अवधहिं जड़ जवन अनरथ किये अनखानि ॥"

(संवत 1585 और विक्रम संवत में से 57 वर्ष घटा देने से ईस्वी सन 1528 आता है।)

*"राम जनम महि मन्दिरहिं तोरि मसीत बनाय ।*

*जवहिं बहुत हिन्दू हते तुलसी कीन्हीं हाय॥*

*दल्यो मीरबाँकी अवध मन्दिर रामसमाज।*

*तुलसी रोवत हृदय हति त्राहि त्राहि रघुराज ॥*

*राम जनम मन्दिर जहाँ लसत अवध के बीच।*

*तुलसी रची मसीत तहँ मीरबाँकि खल नीच॥"*

अति प्राचीन कालीन ध्वंसावशेषित अयोध्या के उद्धार का श्रेय अयोध्या की जनश्रुति में अयोध्या–माहात्म्य की पौराणिक परम्परा के आधार पर विक्रमादित्य नामक राजा को दिया जाता है। इस विक्रमादित्य नाम से सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा चन्द्रगुप्त द्वितीय है। साकेत गुप्त–साम्राज्य का हिस्सा रहा है। "अनुगंगं प्रयागं च साकेतु मगधांस्तथा ... एतान् जनदान् सर्वान् भोक्ष्यन्ते गुप्तवंशजाः।" (वायु पुराण, 99.383)।

दीनबंधु पाण्डेय अपनी पुस्तक 'राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या की प्राचीनता– अभिलेख एवं पुरातात्विक उत्खननों के प्रमाणों पर आधारित' मे उल्लेख करते हैं कि "2003 ई. के राम–जन्मभूमि स्थल के पुरातात्विक उत्खननों में गुप्तकालीन कलाकृतियाँ एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय का सिक्का भी प्राप्त हुआ है और गुप्त–काल एवं उसके पहले के भी ईंटों की प्राप्ति अयोध्या जन्मभूमि–स्थल से प्राप्त हुई है। ऐतिहासिक कालक्रम में राम–जन्मभूमि स्थल पर प्राचीनतम मन्दिर–निर्माण गुप्तवंश के शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय (लगभग 375–414 ई.) तक पीछे जाता है। मन्दिर संरचाएँ गुप्तकाल से

ही बननी शुरू हुई और चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त के पुत्र प्रवरसेन ने भी अपनी वाकाटक राजधानी प्रवरपुर में राम मन्दिर की रचना की थी।"

भारतीय जनमानस में रामराज्य की सांस्कृतिक अस्मिता –

प्रभु श्री राम भारतीय जनमानस के चेतना के पर्याय हैं। राम नाम का संबंध तो जीवन दृ मरण से जुड़ा हुआ है द्य यह संसार रूपी भवसागर को पार करने का एक माध्यम है। जीवात्मा को मुक्ति और मोक्ष प्रदान करने वाला है द्य भारतीय जनमानस के मन में राम नाम की महिमा जितनी व्यापक है उतनी ही उत्कंठ आकांक्षा एक आदर्श रामराज्य देखन की भी है। शायद यही कारण है कि अयोध्या में राम मंदिर की स्थापना तथा रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा आज समूचे भारतवर्ष के लिए हर्ष का विषय है। यह परिघटना देश की सामाजिक, सांकृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य में आने वाले एक बड़े बदलाव की ओर संकेत करती है। यह लोकतंत्र में एक आदर्श व्यवस्था यानि रामराज्य की कल्पना को साकार रूप प्रदान करने जैसा है।

हेमंत शर्मा अपने लेख 'तुलसी–कबीर–गांधी–लोहिया–विनोबा, क्यों सबके प्रिय हैं राम?' मे लिखते हैं कि "आखिर ये राम हैं कौन? जिनका नाम लेकर एक बूढ़ा गांधी अंग्रेजी साम्राज्य से लड़ गया। जिसके नाम पर इस देश में आदर्श शासन की कल्पना की गई। उसी रामराज्य के सपने को देख देश आजाद हुआ। गांधी ने अपने सपने को सुराज कहा। विनोबा इसे प्रेम योग और श्साम्य योगश के तौर पर देखते थे।" महर्षि वाल्मीकि अपने रामराज्य की व्याख्या करते हुये लिखते हैं–

"काले वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षविमला दिशः हृष्टपुष्टजनाकीर्ण पुः जनपदास्तथा ।

नकाले म्रियते कश्चिन व्याधिः प्राणिनां तथा नानर्थो विद्यते कश्चिद् पाने राज्यं प्रशासति ।।"

अर्थात "जिस शासन में बादल समय से बरसते हों। सदा सुभिक्ष रहता हो, सभी दिशाएँ निर्मल हों। नगर और जनपद हृष्ट–पुष्ट मनुष्यों से भरे हो। जहाँ अकाल मृत्यु न होती हो, प्राणियों में रोग न हो, न किसी प्रकार का अनर्थ हो। पूरी धरा पर एक समन्वय और सरलता हो, यानी प्रकृति के साथ सहज तादात्म्य हो, वही रामराज्य है।"

महात्मा गांधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे। उनके नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन का उद्देश्य ही बदल गया था। उनसे पहले स्वतंत्रता आंदोलन का उद्देश्य केवल मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता था। अंग्रेजी शासन से मुक्ति था लेकिन गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन को भारतीय सभ्यता की, भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनः प्रतिष्ठा से जोड़ दिया। अपने इस उद्देश्य को उन्होंने पहले स्वराज्य

कहा। फिर स्वराज्य के साथ–साथ उसे रामराज्य कहा। अपने स्वराज्य और रामराज्य की व्याख्या करते हुए अंत में उन्होंने उसे ग्राम स्वराज्य बताया था। उन्होंने देश के कोने–कोने में जाकर स्वतंत्रता की, स्वराज्य की, रामराज्य की अलख जगाई। उनके आने से पहले जो आंदोलन देश के थोड़े पढ़े– लिखे लोगों तक सीमित था, वह पूरे भारतीय समाज की भागीदारी वाला आंदोलन हो गया। स्वतंत्रता आंदोलन में पूरे समाज का संकल्प जुड़ गया। व्यापक भारतीय समाज देश की स्वतंत्रता के, स्वराज्य के, आंदोलन को रामराज्य के रूप में ही पहचानता था। जब देश को स्वतंत्रता मिली तो स्वतंत्र भारत की राजनैतिक व्यवस्था का निर्णय करने का अवसर आया। यह वह समय था जब यूरोप में लोकतन्त्र स्वरूप ले रहा था। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में ही वह यूरोप के अधिकांश देशों की राजनैतिक व्यवस्था के रूप में स्वीकृत हुई थी।

गांधी जी 1909 में अपना सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ हिन्द स्वराज पुस्तक में ब्रिटिश लोकतन्त्र के लिए सबसे कठोर शब्द का प्रयोग करते हुये कहा था कि "ब्रिटिश पार्लियामेंट उचित–अनुचित का विवेक करके कानून नहीं बनाती। वह वेश्या की तरह है, जिस दल का बहुमत होता है उसी के प्रस्तावित कानून को स्वीकृति दे देती है। लोकतन्त्र में राज्य के पास ही सारी शक्ति केंद्रित होती है। उसे जनता का शासन बताना गलत है। वोट गिनकर जनता का मत नहीं समझा जा सकता।"

रामराज्य का जो स्वरूप लोक–स्मृति में है, वही शास्त्रीय चिंतन में है। जिस राम कथा से एक आदर्श राज्य व्यवस्था के रूप में रामराज्य का उदय हुआ, उसे वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक निरंतर दोहराया जाता रहा है। भारत की सभी भाषाओं में पहला महाकाव्य प्रायरू रामकथा पर ही लिखा गया है। भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में रामायण की रचना हुई और वह वहां के शास्त्रीय चिंतन और लोक–स्मृति का आधार बनी। हिन्दी भाषी क्षेत्र में गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस को लोक और शास्त्र दोनों जगह महत्व मिला है। उससे हम अन्य भाषाओं में रचित रामायणों के महत्व और उनकी लोकप्रियता के बारे में जान सकते हैं। वास्तव में शास्त्रीय चिंतन से निकलकर ही रामराज्य संबंधी मान्यताएं लोक–स्मृति में आई हैं।

बनवारी जी अपने आलेख 'रामराज्य का आदर्श' में बताते हैं कि भारतीय समाज की इस लोक–स्मृति से हम रामराज्य की तीन महत्वपूर्ण विशेषताओं को पहचान सकते हैं। रामराज्य धर्म का शासन है, उसका आदर्श नैतिक है, उसमें राजा और प्रजा दोनों ही धर्म द्वारा शासित होते हैं। वह प्रजा पर राजा का या राज्य का शासन नहीं है। रामराज्य की दूसरी विशेषता यह है कि वह अपराजेय है। वह अनुलंघनीय है। वह पराक्रम में इतना ऊंचा है कि कोई उससे युद्ध करने का साहस न कर सके। वह नीति में इतना ऊंचा है कि कोई उससे युद्ध करने की इच्छा न कर सके। ऐसा शासन

ही ईक्ष्वाकु वंश का संकल्प था। ऐसे राज्य की स्थापना के लिए ही सूर्यवंशियों ने अपनी राजधानी का नाम अयोध्या रखा था। रामराज्य की तीसरी विशेषता यह है कि उसके राजा राम मर्यादापूर्वक रहते हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उनके अनुकरण पर भारत के सभी राजाओं का मर्यादा में रहने की प्रेरणा मिलती रही है। दुनिया में अन्य सभी जगह राजा को विधि प्रदाता कहा गया है। यूरोप में तो राजा ही लॉ है। इस नाते राज्य ही लॉ गिवर है। लेकिन भारत में राज्य विधि प्रदाता नहीं माना गया था। विधि निर्माण समाज का काम है। उसकी बनाई विधि से ही मर्यादा निश्चित होती है। उन मर्यादाओं का जैसे समाज पालन करता है, वैसे ही राजा भी पालन करता है। राजा रामचंद्र को तो मर्यादाओं का पालन करने वाले लोगों में सबसे उत्तम कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि भारत में राजा समाज के अधीन है। समाज राजा के या राज्य के अधीन नहीं है। कोई भी समाज अपने स्वत्व में ही अपनी नियति को पहचान और पा सकता है। वह स्वत्व रामराज्य है। ब्रिटिश आधिपत्य और उससे उत्पन्न औपनिवेशिक मानसिकता ने भारत को उसकी आत्मा से विलग करने के प्रभावी प्रयास किये हैं। यह भारतीय चित्त की अन्तर्निहित ऊर्जा ही है जिसके कारण यह प्रयास पूरी तरह सफल नहीं हो पाया ।

लोकतन्त्र के नाम पर यूरोपीय राज्य व्यवस्था अपनाकर हमने राज्य को केंद्रीय शक्ति बना दिया है। भारत जैसे विशाल देश में इस तरह की केंद्रीय व्यवस्था एक तरह की अराजकता को ही जन्म दे सकती है। भारत में शासन का मुख्य दायित्व समाज का था। समाज की सभी इकाइयां अपने विवेक और अपनी आवश्यकता के अनुसार निर्णय करती थी। हमने जो व्यवस्था बनाई है, उसने समाज के सारे दायित्व राज्य को सौंप दिए हैं। समाज की भूमिका नगण्य हो गई है। इससे समाज का क्षरण हो रहा है। नैतिक मर्यादाएं नष्ट हो रही हैं। अपराध और स्वेच्छाचार बढ़ता जा रहा है। राज्य के पास पूरे समाज को नियंत्रित करने वाला तंत्र नहीं हो सकता। सात दशक पहले लोकतन्त्र की लुभावनी छवि दिखाई देती थी, आज उसके दुष्परिणाम दिखाई देने लगे हैं। इस स्थिति से उबरने के लिए हमे अपने आदर्शों की ओर लौटना चाहिए। स्वतंत्रता आंदोलन के समय स्वराज्य, रामराज्य और ग्राम स्वराज्य का जो संकल्प लिया गया था उसे फिर से दोहराने की आवश्यकता है।

राम जन्मभूमि आंदोलन–सांस्कृतिक पुनुरुत्थान

राम जन्मभूमि आंदोलन किसी समुदाय या सम्प्रदाय के प्रति घृणा, हिंसा या प्रतिक्रिया पर आधारित नहीं था। अपितु भारतीय संस्कृति के उत्स की ओर उन्मुख वह विचार है जो राष्ट्रीयता और संस्कृति को वर्तमान संदर्भों में पुनः परिभाषित करता है। भानु प्रताप शुक्ल के शब्दों में, "भारतीय

अस्मिता के प्रतीक इस यज्ञ की मंजिल केवल अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर एक मंदिर बनाना ही नहीं समस्त भारत को जीवित–जागृत भारतमाता के रुप में प्रतिष्ठित करना है। यह यज्ञ–अश्व दिल्ली के सिंहासन सहित कंगालों की जीर्ण–शीर्ण कुटिया तक भी जाएगा। यह भूखों का पेट भरेगा। भारतवासियों में निर्मल भावनाएं भरेगा। यह भूख, बीमारी, बेरोजगारी, अशिक्षा, अज्ञान, अस्पृश्यता को समाप्त करके सामाजिक दृआर्थिक समस्याओं को जाति और महजब की तुला पर तौलने की घातक, प्रवृति और प्रक्रिया को रोककर राष्ट्रीय समस्याओ को उनकी समग्रता और सही संदर्भ मे प्रस्तुत करेगा। ”

एक समय था, जब राम के बारे में, हमारी संस्कृति और सभ्यता के बारे में बात करने तक से बचा जाता था। इसी देश में राम के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाए जाते थे। उसका परिणाम क्या हुआ? हमारे धार्मिक, सांस्कृतिक स्थान और नगर पीछे छूटते चले गए। बीते आठ वर्षों में देश ने हीनभावना की इन बेड़ियों को तोड़ा है। भारत के तीर्थों के विकास की एक समग्र सोच को सामने रखा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी श्री राम कथा पार्क में भगवान श्री राम के राज्याभिषेक के अवसर पर दिये गए भाषण में कहते है कि ”राम मंदिर और काशी विश्वनाथ धाम से लेकर केदारनाथ और महाकाल महालोक तक, घनघोर उपेक्षा के शिकार हमारी आस्था के स्थानों के गौरव को पुनर्जीवित किया गया है। एक समग्र प्रयास कैसे समग्र विकास का जरिया बन जाता है, आज देश इसका साक्षी है। आज अयोध्या के विकास के लिए हजारों करोड़ों रुपए की नई योजनाएँ शुरू की गई है। सड़को का विकास हो रहा है। चौराहों और घाटों का सौदर्याकरण हो रहा है। नए इंफ्रास्ट्रक्कर तर रहे है। अयोध्या का विकास नए आयाम छू रहा है।”

इस सांस्कृतिक विकास के कई सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय आयाम भी है। श्रृंगवेरपुर धाम में निषादराज पार्क का निर्माण किया जा रहा है। यहाँ भगवान राम और निषादराज की 51 फीट ऊँची कांस्य प्रतिमा बनाई जा रही है। ये प्रतिमा रामायण के उस सर्वसमावेशी संदेश को भी जन–जन तक पहुंचाएगी जो हमें समानता और समरसता के लिए संकल्पबद्ध करता है। इसी तरह, अयोध्या में क्वीन–हो मेमोरियल पार्क का निर्माण कराया गया है। यह पार्क भारत और दक्षिण कोरिया अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाने के लिए, दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने का एक माध्यम बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी दीपोत्सव के उपलक्ष्य मे दिये गए अपने भाषण मे कहते है कि ”अयोध्या भारत की महान सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब है। राम, अयोध्या के राजकुमार थे, लेकिन आराध्य संपूर्ण देश की हैं।”

निष्कर्ष–

प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी 2024 को प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर दिए अपने भाषण में स्पष्ट तौर पर कहा कि "रामलला के इस मंदिर का निर्माण भारतीय समाज की शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का प्रतीक है। यह संघर्ष नहीं समाधान है, राम सिर्फ हमारे नहीं सबके हैं। यह भारतीय जनमानस की परिपक्वता एवं उच्च मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। प्रधानमंत्री ने भगवान राम को एकता का प्रतीक बताते हुए कहा कि समुद्र से सरयू नदी तक, राम के नाम की महिमा व्याप्त है। भगवान राम भारत की आत्मा और कण–कण से जुड़े हुए हैं। राम करोड़ों भारतीयों के दिलों में बसते हैं। यह हमारी सामूहिक शक्ति का परिचायक है।

संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत जी अपने लेख 'श्री राम जन्मभूमि मंदिर राष्ट्रीय गौरव के पुनर्जागरण का प्रतीक में' इस बात को रेखांकित करते हैं कि "अयोध्या में श्री राम मंदिर के निर्माण का अवसर अर्थात राष्ट्रीय गौरव के पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह आधुनिक भारतीय समाज द्वारा भारत के आचरण के मर्यादा की जीवनदृष्टि की स्वीकृति है। मंदिर में श्रीराम की पूजा श्पत्रं पुष्पं फलं तोयंश की पद्धती से और साथ ही राम के दर्शन को मन मंदिर में स्थापित कर उसके प्रकाश में आदर्श आचरण अपनाकर भगवान श्री राम की पूजा करनी है क्योंकि षशिवो भूत्वा शिवं भजेत् रामो भूत्वा रामं भजेत्ष को ही सच्ची पूजा कहा गया है।"

इस दृष्टि से विचार किया जाए तो भारतीय संस्कृति के सामाजिक स्वरूप के अनुसार–

"मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्।

आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पंडितः।"

जीवन में सत्यनिष्ठा, बल और पराक्रम के साथ क्षमा, विनयशीलता और नम्रता, सबके साथ व्यवहार में नम्रता, हृदय की सौम्यता और कर्तव्य पालन में स्वयं के प्रति कठोरता इत्यादि, श्री राम के गुणों का अनुकरण हर किसी को अपने जीवन में और अपने परिवार में सभी के जीवन में लाने का प्रयत्न ईमानदारी, लगन और मेहनत से करना होगा।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है और लोंकतंत्र को कायम रखने के लिए एक आदर्श शासन व्यवस्था की आवश्यकता है। यह रामराज्य के माध्यम से ही संभव है। नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में काम करने वाली भारत सरकार पहले से ही एक आदर्श शासन व्यवस्था अर्थात रामराज्य की कल्पना को साकार करने का ही प्रयास कर रही है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका

प्रयास, यह नारा ही अपने आप में जनतांत्रिक मूल्यों, सामूहिक भावना, आपसी सौहार्द तथा अनेकता में एकता, विविधता में समानता का परिचायक है। अच्छे दिन आयेंगे एक आशावादी– और सकारात्मक नजरिए का प्रतीक है। भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा इस बात का प्रतीक है कि भारत देश भविष्य में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से मजबूत तथा दुनिया में अपना परचम लहराएगा।

## संदर्भ सूचीः


- ऋग्वेद 7.82.10ए वं 7.83.10
- ओउम् अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या। तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः
- प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु। ये युक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम् ॥
- दीनबंधु पाण्डेय (2019) राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या की प्राचीनता – अभिलेख एवं पुरातात्विक उत्खननों के प्रमाणों पर आधारित स्टंडेर्ड पब्लिशर इंडियाः नई दिल्ली
- हीरालाल पाण्डेय, (2007) इस्लाम और उसकी सम्प्रभुता का प्रबन्धनः भारतीय परिदृश्य, (पृ. 160–169) नई दिल्ली
- मूलतः श्री रामभद्राचार्य द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय में प्रस्तुत, न्यायालयीय निर्णय पृ. 783 पर सन्दर्भित दोहा 88–91
- दीनबंधु पाण्डेय (2019) राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या की प्राचीनता– अभिलेख एवं पुरातात्विक उत्खननों के प्रमाणों पर आधारित स्टंडेर्ड पब्लिशर इंडियाः नई दिल्ली
- सुभाष कुमार गौतम (10 फरवरी 2024) श्री राम से रामराज्य तक https://panchjanyacom/2024/02/10/318605/culture/from&shri&ram&to&ramrajya/ से 12 फरवरी 2024 को पुनर्प्राप्त
- हेमंत शर्मा (30 मार्च 2023) तुलसी–कबीर–गांधी–लोहिया–विनोबा, क्यों सबके प्रिय हैं राम\https://www-tv9hindi-com/opinion/special&on&ram&navami&tulsi&kabir&gandhi&lohia&vinoba&why&is&ram&loved&by&all&an464–1794246-html से, 05 फरवरी 2024 को पुनर्प्राप्त
- वहीय बनवारी ( जनवरी 2024) रामराज्य का आदर्श नवोत्थान वर्ष 09 अंक 03 पृ 17–23
- महात्मा गांधी (1951) हिन्द स्वराज (पृ 32–36) अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन
- गिररीश्वर मिश्रा (2019) भारत की पहचान राष्ट्रीय पुस्तक न्यासः नई दिल्ली
- बनवारी (जनवरी 2024). रामराज्य का आदर्श,नवोत्थान, वर्ष 09 अंक 03 पृ 17–23

- चंपत राय (5 दिसम्बर 2016) श्री राम जन्म भूमि मूवमेंटः मूमेंट ऑफ रिसरजेंस https://organiserorg/2016/12/05/118286/bharat/shri&ram&janmabhoomi&movement&moment&of&resurgence/ से, 6 फरवरी 2024 को पुनर्प्राप्त
- मनीष श्रीवास्तव (2000) हिन्दी पत्रकारिता में अयोध्या विवाद नमन प्रकाशनः नई दिल्ली
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का अयोध्या में आयोजित दीपोत्सव के उपलक्ष्य में 23 अक्टूबर 2022 के भाषण का अंश https://youtu-be/rfdThhHdIbA\si=Q1GyObTXDQLm1G0W संसद टीवी से 10 फरवरी 2024 को पुनर्प्राप्त
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का 22 जनवरी 2024 को श्री रामजन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा के अवसर में सम्बोधन https://youtu-be/IqrbKuEriEY\si¾02EcVuk5quFGgZQo से, 11 फरवरी 2024 को पुनर्प्राप्त
- डॉ. मोहन राव भागवत (21 जनवरी 2024) श्री राम जन्मभूमि मंदिर राष्ट्रीय गौरव के पुनर्जागरण का प्रतीक https://panchjanya-com/2024/01/21/315096/bharat/mohan&bhagwat&article&on&the&inauguration&of&ram&janmabhoomi&temple/से, 11 फरवरी 2024 को पुनर्प्राप्त


♦♦♦♦♦

6

# राम मंदिरः धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व

ऐलिन

विद्यार्थी, जीसस ऐंड मेरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

राम मंदिर जो कि भारत से प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक माना जाता है। यह उत्तर प्रदेश राज्य के अयोध्या शहर में स्थित है और हिंदू धर्म की पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को अर्पण है। यह मंदिर मात्र एक इमारत ही नहीं, अपितु भारत में रहने वाले लोगों की गहन भावनाओं और धार्मिक प्रतिमान का प्रतीक है। इसे भारतीय संविधान के अनुसार धार्मिक स्वतंत्रता का एक प्रतीक माना जाता है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारत के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी घटना है।

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारतीय लोगों के लिए अत्यंत व्यापक तथ्य है। यह राम जन्मभूमि नामक एक विशेष स्थान पर बनाया गया है तथा यह वास्तव में भारतीय संस्कृति और इतिहास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राम मंदिर निर्माण की प्रक्रिया से ज्ञात होता है कि हमारे देश में चीजें कितनी जटिल हो सकती हैं।

राम मंदिर का ऐतिहासिक संदर्भ

इस मंदिर का निर्माण और इतिहास कई दशकों से बहुत विवाद, विचार–विमर्श व कानूनी संघर्ष का विषय रहा है अयोध्या राम मंदिर का इतिहास सदियों पुराना है, और माना जाता है कि इसका निर्माण मूल रूप से राजा विक्रमादित्य के शासनकाल के दौरान प्राचीन शहर अयोध्या में हुआ था। इसकी सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना 1528 में हुई जब मुगल सम्राट बाबर ने मंदिर को नष्ट करना और उसी स्थान पर बाबरी मस्जिद के रूप में जानी जाने वाली मस्जिद के निर्माण का आदेश दिया। बाबरी मस्जिद राम जन्मभूमि विवाद भारत में धार्मिक और राजनीतिक तनाव का केंद्र बन गया। हिंदुओं का मानना है कि बाबरी मस्जिद भगवान राम की जन्मभूमि पर बनाई गई थी, अयोध्या को उनकी जन्मभूमि मानते हुए। इस विश्वास ने इस स्थल पर एक भव्य राम मंदिर के

लिए आंदोलन को जन्म दिया। 1992 में, हिंदू कार्यकर्ताओं भीड़ ने विवादित ढांचे को ध्वस्त कर दिया, जिससे आगे चलकर हिंसा और सांप्रदायिक संघर्ष हुआ। विध्वंस के कारण व्यापक कानूनी

कार्रवाई हुई जो अंततः नवंबर 2019 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले के साथ समाप्त हुई। भारत की सुप्रीम कोर्ट ने इस विवादित जमीन को हिंदू पक्ष को सौंपने का निर्णय दिया, और मुस्लिम पक्ष को अयोध्या में ही एक अन्य स्थान पर मस्जिद बनाने की जमीन दी गई। इस फैसले के बाद, भारत सरकार ने भव्य राममंदिर के निर्माण की घोषणा की, जो अब तक जारी है।

5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में रामलला मंदिर का शिलान्यास किया पूर्व निर्धारित तिथि के अनुसार राम मंदिर 'प्राण प्रतिष्ठा' समारोह 22 जनवरी 2024 को आयोजित किया गया। इससे राम मंदिर के द्वार लोगों के लिए खोले गए।

- अयोध्या में बन रहा है राम मंदिर लाखों भारतीयों के लिए धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व का प्रतीक है। यह राष्ट्रीय चेतना, सामुदायिक पहचान और ऐतिहासिक स्मृति पर विचार–विमर्श का केंद्र बिंदु बन गया है। इस मंदिर का निर्माण केवल एक धार्मिक पुनरुद्धार का सूचक है, अपितु यह भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के उन्नयन का भी प्रतीक है। राम मंदिर का निर्माण उस आध्यात्मिक एकता के लिए केंद्र बिंदु प्रदान करता है जिसकी आधारशिलाएँ भारतीय संस्कृति में गहराई से स्थापित है। इस प्रकार यह मंदिर न केवल एक पूजा स्थल है, बल्कि है राष्ट्रोय एकता और सामाजिक समरसता के प्रतीक के रूप से भी उभर रहा है जो सभी भारतीयों को उनकी विविधता में एकजुट करता है।

- राम मंदिर का निर्माण भारत की राष्ट्रीय चेतना में महत्वपूर्ण योगदान देता, है यह भारतीय इतिहास, संस्कृति और धार्मिक विचारों के संयोग को दिखाता है। इसकी महिमा केवल धार्मिक प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकत्व और स्वयं पहचान के प्रतीक के रूप में भी उभरा है। राम मंदिर उस विचारधारा की छाया है जो भारत के गौरवपूर्ण अतीत और सांस्कृतिक विरासत की कथाओं को पुनः जागृत करती है। इसे बनाने का परिणाम और उसकी विधि से न केवल हिंदू समुदाय में, बल्कि समस्त राष्ट्र में एक नए राष्ट्रीय चेतना की तरंग का जन्म हुआ। इस चेतना को धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक सम्मान और ऐतिहासिक स्मृति कि दिशा में एक कदम माना जा सकता है, जो भारत को एक विविध लेकिन एकजुट राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में अग्रणी है। इस स्वरूप से, राम मंदिर का उद्‌भव कवल एक धार्मिक स्थान का निर्माण नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज के विस्तृत आदर्शों और अभिलाषाओं का प्रतीक है। इस प्रकार,

राम मंदिर का विचार विभिन्न आयामों में राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित करता है, और यह भारतीय समाज में गहरे विचार–विमर्श का कारण बनता है।

• अयोध्या में स्थित राम मंदिर, हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए ना केवल एक निर्मल स्थान है, बल्कि एक गहरे विश्वास का प्रतीक भी है। यह मंदिर भगवान राम का जन्मस्थान माना जाता है, जो हिंदू धर्म में प्रतिष्ठा पुरुषोत्तम के रूप में पूजे जाते हैं। भारतीय संस्कृति में भगवान राम का जीवन और उनके आदर्श को उच्च मूल्यों और नैतिक जीवन की उत्तेजना के रूप में देखा जाता है। उनकी कहानियाँ और उपदेश विश्वास, धर्म, सत्य और धार्मिकता के महत्त्व को बताते हैं।

अयोध्या में स्थित राम मंदिर का निर्माण इस विश्वास का परिणाम है कि भगवान राम न मात्र अतीत के एक पौराणिक चरित्र हैं, बल्कि वर्तमान समय भी वे अपने अनुयायियों के हृदय में जीवित हैं। इस मंदिर का अस्तित्व एक माध्यम है जिससे हिंदू आस्था की गहराई और इसकी सांस्कृतिक जड़ों के साथ गहरा संबंध बनाए रखता है। यह स्थल न केवल तीर्थ स्थान के रूप में देखा जाता है, यह एक ऐसा स्थल भी है जहाँ लोग एकता और धार्मिक विश्वास की भावना को प्रोत्साहित कर सकते हैं। राम मंदिर भारतीय परंपरा और संस्कृति के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, साथ ही राम मंदिर के प्रति यह विश्वास और श्रद्धा भारत के समाज में नैतिकता और धार्मिक मूल्यों को मजबूती देती है।

• राम मंदिर का विकास भारत की संस्कृति और समाज के लिए एक महत्वपूर्ण घटना है, जो कि भावनात्मक, धार्मिक और आर्थिक विकास से संबंधित है। अयोध्या में राम मंदिर एक धार्मिक प्रतीक होने के साथ–साथ आसपास की भूमि में समग्र विकास को भी प्रोत्साहित करता है। इसके निर्माण के परिणाम वहाँ की स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा क्योंकि इसके कारण पर्यटन क्षेत्र में वृद्धि होगी, जैसे होटल, रेस्टोरेंट और अन्य पर्यटन से जुड़े यातायात में उपलब्धि होगी।

साथ ही, राम मंदिर की रचना स्थानीय समुदाय में रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगी। पर्यटन सेवाएँ, विभिन्न सहायक सेवाएँ और निर्माण कार्यों में लोगों को काम मिलेंगे जिससे आय के नए आयामों का जन्म होगा और आर्थिक वृद्धि को बल प्रदान होगा। इस प्रकार, राम मंदिर एक माध्यम बन सकता है, जिससे आर्थिक और सामाजिक दोनों ही परिप्रेक्ष्यों से स्थानीय समुदायों का विकास होगा। राम मंदिर न केवल भौतिक रूप से बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से भी विकास का अभिन्न अंग बन जाता है।

यह मंदिर एक आशा की किरण बनकर उभर रहा है, जो राष्ट्रीय गौरव और एकता की भावना को बढ़ावा दे रहा है। राम मंदिर के निर्माण से जुड़े ये सभी पहलू, विचार, विश्वास और विकास,

भारतीय समाज के विभिन्न स्तरों पर गहराई से प्रभावित करते हैं। यह मंदिर धार्मिक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना का भी एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके माध्यम से भारतीय इतिहास, संस्कृति और समाज के विकास की नई दिशाएं प्रकट होंगी।

## संदर्भ सूचीः


- Mahak Singh (2024). Ayodhya Ram Mandir, jke eafnj dk lVhd bfrgkl, *Panchjanya*.
- India News Desk (2024). Ram Mandir has truly become a temple of national consciousness: BJP resolution. *The Financial Express.*
- Anviti Sohla (2024). Ayodhya Ram Mandir: A story of Hindu Faith and Devotion. *Exotic India Art.*
- Arnab Dutta (2024). How the Ram Mandir construction is fuelling an economic boom. *Business Today*.
- PTI (2024). Ram temple consecration ceremony reawakening of national consciousness: Himanta Biswa Sarma. *The Economic Times.*

Aiming High, Touching Sky

# सी जी एस

# वैश्विक अध्ययन केंद्र

## (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)


अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281